विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 4 अंक : 13 मार्च, 2011

विश्व हिंदी दिवस समारोह

हिंदी की जानकारी वैश्विक अनिवार्यता बनती जा रही है

डॉ. मनमोहन सिंह

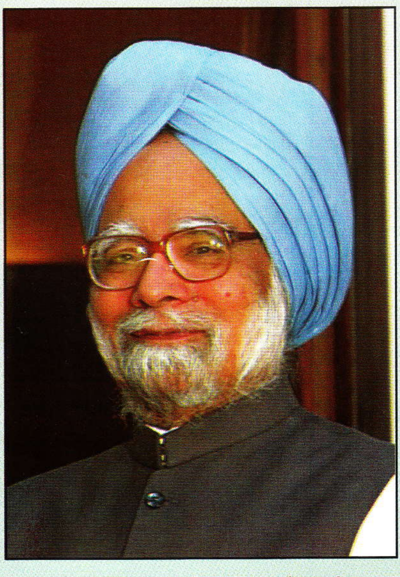

भारत के प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि हर वर्ष 10 जनवरी का दिन विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व में हिंदी को लोकप्रिय भाषा का दर्जा दिलाने में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति और विकास में भाषा अहम भूमिका निभाती है। वैश्विक अर्थ व्यवस्था में एक प्रमुख बाज़ार के रूप में उभरकर सामने आ रहे भारत को जानने-समझने के लिए हिंदी भाषा की जानकारी भी वैश्विक अनिवार्यता बनती जा रही है। इन परिस्थितियों में विदेश के भारतीय मिशनों की ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी के सक्रीय योगदान से हम जल्दी ही हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर एक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय भाषा के रूप में स्थापित कर पाएँगे। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई और नव वर्ष की शुभकामनाएँ।

डॉ. मनमोहन सिंह
भारत के प्रधानमंत्री

हमारी संस्कृति और इतिहास का महत्वपूर्ण अंग है हिंदी भाषा

महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ

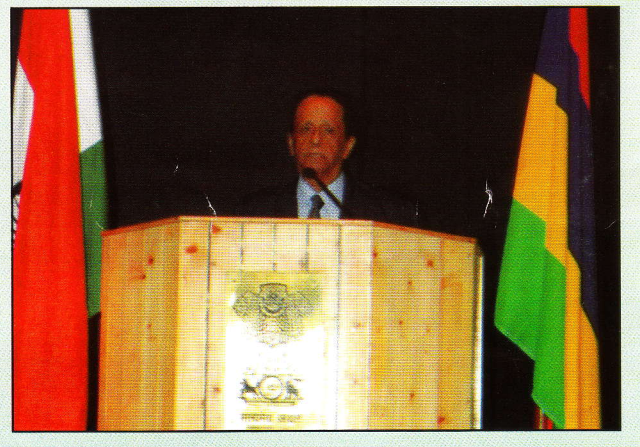

मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ

मॉरीशस । 10 जनवरी, 2011 को फ़ेनिक्स स्थित इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में विश्व हिंदी दिवस का भव्य रूप से आयोजन किया गया। यह समारोह विश्व हिंदी सचिवालय, भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, कला एवं संस्कृति मंत्रालय तथा इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ एवं गणराज्य की प्रथम महिला श्रीमती सरोजनी जगन्नाथ के साथ ही शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी, कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी एवं भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। दक्षिण कोरिया के हाँकुक विश्वविद्यालय से प्रो.(सुश्री) किम ऊ जो इस अवसर पर सचिवालय द्वारा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित हुईं । विश्व हिंदी दिवस : 2011 के संदर्भ में सचिवालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने हेतु पधारे भारतीय विद्वान भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

जन-भाषा हिंदी के इस गौरव-दिवस पर इस की महिमा का गान करने के लिए मॉरीशस के कोने-कोने से भारी संख्या में हिंदी प्रेमियों ने समारोह में भाग लिया और विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने अपने स्वागत-भाषण में सभी अतिथियों को प्रणाम किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने अपने वक्तव्य के प्रारंभ में ही हिंदी के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति की और आयोजकों को बधाई देते हुए मॉरीशस के लिए हिंदी के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व पर बल दिया । गणराज्य के राष्ट्रपति के शब्दों में ***'हिंदी भाषा हमारी संस्कृति और इतिहास का महत्वपूर्ण अंग है। मॉरीशस को इस बात पर हमेशा गर्व रहा है कि यहाँ के लोग अनेकों भाषाएँ बोलते और समझते हैं। इनमें हिंदी एक प्रमुख भाषा है।'***

इसके साथ ही सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने देश की प्रगति-यात्रा में, मॉरीशस को शिक्षा के क्षेत्र में एक वैश्विक केंद्र

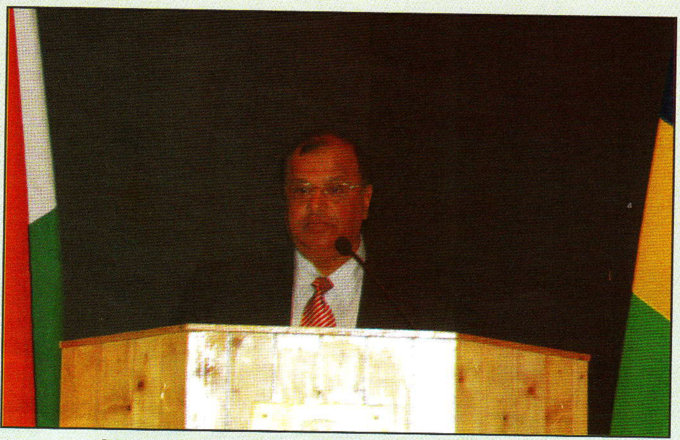

शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी

के रूप में स्थापित करने की सरकार की योजना में हिंदी के अमूल्य योगदान को भी उभारा। राष्ट्रपति ने विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार की दिशा में कार्यों के लिए सचिवालय, शिक्षा मंत्रालय और विशेषरूपेण भारत सरकार और मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने भी हिंदी के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते हुए अपने संदेश में भारत से बाहर हिंदी शिक्षण, शोध और प्रचार में मॉरीशस को सबसे बड़ा केंद्र बताया। उनके संदेश में विशेष रूप से इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षण-प्रणाली की नई परिभाषाओं की खोज में हिंदी की आधारभूत भूमिका हो सकती है : ***'मुझे पूरा विश्वास है कि हिंदी भाषा में जिस तरह की संस्कृति समाई हुई है उससे हमारे बच्चे बेहतर नागरिक बन पाएँगे। मैं आप सब से अनुरोध करूँगा कि अपने बच्चों को हिंदी भाषा सिखाएँ।'***

शिक्षा मंत्री ने आशा व्यक्त की कि सचिवालय इसी तरह अपना काम करता रहे ताकि भारत और मॉरीशस की सरकारों

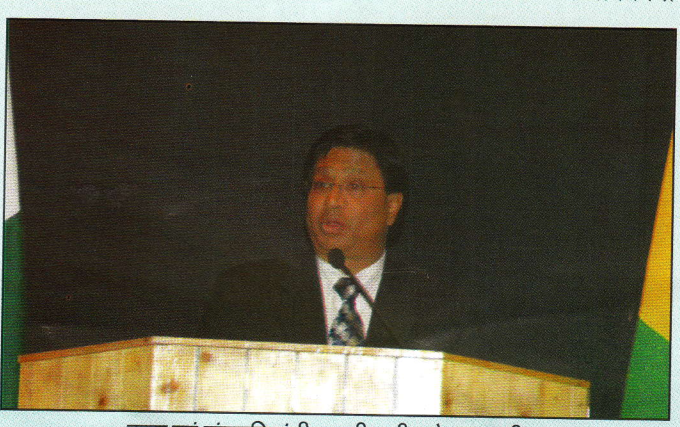

कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी

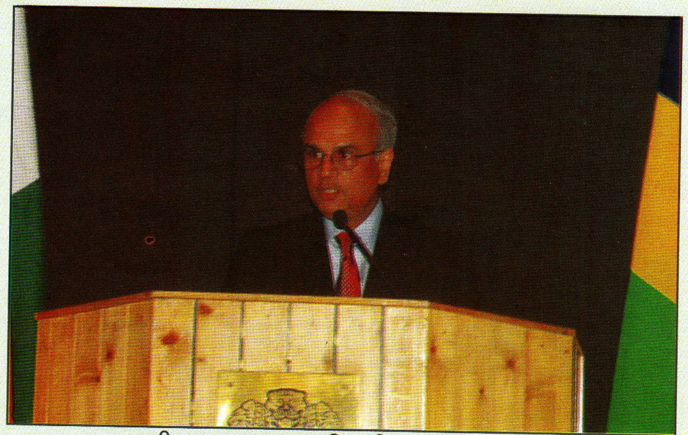

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति

ने हिंदी को विश्व भाषा बनाने का जो सपना देखा है, वह जल्द से जल्द साकार हो।

कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी ने हिंदी की विश्वव्यापि उपस्थिति तथा उस में मॉरीशस की भूमिका तथा मॉरीशस राष्ट्र और यहाँ के नागरिकों के चरित्र निर्माण में हिंदी के योगदान पर अपना संदेश केंद्रित किया। ***'हमारे देश के विकास में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हमारे देश की आज़ादी और हमारे राष्ट्र के निर्माण में हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। इसीलिए हमारे देश में हिंदी का प्रचार बहुत ज़रूरी है। भारत और मॉरीशस सरकार हिंदी की प्रगति के लिए कटिबद्ध हैं।''***

मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति ने अपने संदेश में कहा कि यह सर्वदा उचित है कि विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन उस जगह हो रहा है जहाँ विश्व हिंदी सचिवालय स्थित है और जहाँ भारत से बाहर लोग सबसे ज़्यादा भारी संख्या में हिंदी से प्यार करते हैं। महामहिम गणपति जी के लिए हिंदी विश्व-बंधुत्व की संकल्पना को साकार करने वाली भाषा है:

'आज जब हम उपनिषद में कहे गए गौरवशाली वाक्य 'वसुधैवकुटुंबकम्' को याद करते हुए हिंदी पर दृष्टिपात करते हैं तो वह विश्व के प्रत्येक कोनों में लोगों को आपस में जोड़ने वाली भाषा बनती दिखती है। हिंदी आज औपचारिक और अनौपचारिक, दोनों तरीकों से दुनिया के 90 से अधिक देशों में पढ़ाई जा रही है।'

उन्होंने मित्र देश दक्षिण कोरिया से विदूषी व समर्पित हिंदी प्रेमी प्रो. किम ऊ जो की उपस्थिति को इसका श्रेष्ठ उदाहरण

मुख्य वक्ता प्रो.(सुश्री) किम ऊ जो

बताया । हिंदी के गुणों का बखान करते हुए उन्होंने विश्वास जताया कि ***'भारत और मॉरीशस सरकार, विश्व हिंदी***

महात्मा गांधी संस्थान द्वारा 'हिंदी रसों का सागर' की प्रस्तुति

सचिवालय एवं दुनिया के अन्य देशों के सहयोग एवं प्रयास से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवी भाषा के रूप में उचित स्थान प्राप्त होगा। यही हमारा सपना है। यही हमारा लक्ष्य है। यही हमारा कर्तव्य है।'

विश्व हिंदी दिवस समारोह की अतिथि वक्ता प्रो.(सुश्री) किम ऊ जो की मंच पर उपस्थिति ही सभी के लिए सुखद आश्चर्य था और जब उनके मुख से हिंदी के शब्द प्रवाहित हुए तब हिंदी प्रेमियों की आँखों की चमक देखते ही बनी। प्रो. ऊ जो ने कोरिया में हिंदी शिक्षण के इतिहास से अपनी बात आरंभ करते हुए भाषा के अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को भी उजागर किया।

'हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने में आप लोगों के राष्ट्रपिता सर शिव सागर रामगुलाम जी का नाम हमेशा के लिए स्मरणीय रहेगा। हम भूमंडलीकृत विश्व में जी रहे हैं। इस प्रक्रिया में भारत एक महान आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा है। भारत को यू.एन. की सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाने का प्रयत्न भी हो रहा है। और कोरियाई सरकार इसके समर्थन में है। भारत के बाहर जो विदेशी हिंदी भाषा-भाषी हैं, वे लोग हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाते हैं। प्रवासी भारतीयों की सामुहिक शक्ति, प्रयत्न और प्रतिभा महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में मुझे यह मानने में कोई संकोच नहीं है कि मॉरीशस देश अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी की स्थापना के लिए तीर्थ स्थान है।'

प्रो. ऊ जो के शब्द हिंदी प्रेमियों के मन में उत्साह व प्रेरणा के ऐसे दीपक जला गए कि देश भर में कई सप्ताह तक उनकी चर्चा होती रही ।

विश्व हिंदी पत्रिका :2010 का लोकार्पण

विश्व हिंदी पत्रिका के लोकार्पण अवसर पर उपस्थित माननीय अतिथिगण

विश्व हिंदी दिवस समारोह के ही अवसर पर गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक 'विश्व हिंदी पत्रिका : 2010' का सभी गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में भव्य रूप से लोकार्पण हुआ। विश्व हिंदी पत्रिका में प्रथम अंक

के कार्य को आगे बढ़ाते हुए विश्व भर में हिंदी-शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार की गतिविधियों से संबंधित शोधपरक लेख प्रकाशित किए गए हैं साथ में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर के कुछ मॉरीशसीय प्रतिभागियों के रोचक संस्मरणों को भी सम्मिलित किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस के ही संदर्भ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा भी महासचिव डॉ.राजेंद्र प्रसाद मिश्र द्वारा की गई। इस प्रतियोगिता के लिए विश्व भर के विद्वानों ने 'हिंदी कैसे बने संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा' विषय पर गहन चिंतन करते हुए निबंध लिखे थे। प्रथम पुरस्कार श्री नारायण कुमार, द्वितीय डॉ. जयप्रकाश कर्दम और तृतीय पुरस्कार मॉरीशस की श्रीमती तीना जगू- मोहेश को प्राप्त हुआ।

विश्व हिंदी दिवस समारोह नृत्य और संगीत के अत्यंत मनमोहक दृश्यों व ध्वनियों से भी सुसज्जित था। हिंदी की महानता और सुसंपन्नता को संगीतमय रूप से महात्मा गांधी संस्थान के संगीत विभाग के शिक्षक एवं हिंदी की छात्राओं ने 'हिंदी रसों का सागर' के माध्यम से प्रस्तुत किया। यह गीत मॉरीशस के प्रसिद्ध कवि डॉ. ब्रजेंद्र कुमार मंगर भगत 'मधुकर' के हिंदी-प्रेमी हृदय का उद्गार है जिसे सुनकर सभागार मुग्ध हो गया।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा भारत की अनेक संगीत शैलियों के आधार पर 'तबला तरंग' कार्यक्रम में छात्रों ने जब तबला, ढोलक, ढोल की ध्वनियाँ छेड़ीं तब सभागार में उपस्थित लोगों के हृदय की गति तीव्र हो गई और तबला तरंग के समाप्त होने पर जैसे उसकी स्पर्धा में ही तालियों की ध्वनि गूँजी।

कार्यक्रम के अंत में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की कथक शिक्षिका एवं छात्राओं ने मंच को संगीत और रंगों से भर दिया । अमीर खुसरो की तीन रचनाओं को कथक की बानगी में पिरोकर कलाकारों ने वातावरण को ज्योतिर्मय बना दिया ।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा कथक नृत्य

विश्व हिंदी दिवस, 2011 : विश्व भर में

विश्व भर में प्रतिवर्ष 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया जाता है । हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा है । आज हिंदी विश्व-संदर्भ में अपनी भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए नए पग बढ़ा रही है । हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा से परे अब विश्वभाषा बनने की प्रक्रिया में है । विश्व भर में जिस धूम से विश्व हिंदी दिवस मनाया गया यह देखकर सभी हिंदी प्रेमियों, भाषाविदों तथा साहित्यकारों को विश्वास होता है कि वह दिन दूर नहीं जब हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में स्विकृत हो जाएगी ।

दोहा

दोहा में भारतीय उच्चायोग द्वारा 10 जनवरी, 2011 को भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में शाम के छह बजे 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया गया । इस अवसर पर दोहा के भारतीय उच्चायुक्त, श्रीमती दीपा गोपालन वाधवा ने समारोह की अध्यक्षता की । श्रीमती वाधवा ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी के महत्व पर बल देते हुए इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि विश्व हिंदी दिवस सभी प्रवासी भारतीयों के जुटाव के लिए भी महत्वपूर्ण है जिससे भारत व हिंदी प्रेमियों के बीच परस्पर संबंध बना रहे ।

न्यू यॉर्क

न्यू यॉर्क के भारतीय कौंसल द्वारा 20 फरवरी, 2011 को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाने के लिए इंडिया हाउस में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया । शिक्षाविदों, साहित्यकारों, मीडिया के प्रतिनिधी, हिंदी प्रेमी सहित लगभग 100 अतिथियों ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ाई । इस अवसर पर भारतीय कौंसल, श्री प्रभु दयाल ने भारत के प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा । उन्होंने अपने वक्तव्य में हिंदी के प्रचार की आवश्यकता पर भी बल दिया । साथ ही ***''यू.एस.ए में हिंदी की उन्नति''***, ***''स्कूलों में हिंदी की उन्नति''*** तथा ***''हिंदी की लोकप्रियता''*** जैसे विषयों पर आधारित एक संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया । संगोष्ठी के अंत में प्रश्न-सत्र और काव्य पाठ भी हुए ।

बेइजिंग

भारतीय उच्चायोग, बेइजिंग ने 10 जनवरी, 2011 को कल्चर विंग में 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया । बेइजिंग विश्वविद्यालय तथा बेइजिंग कोम्यूनिकेशन विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, छात्र व भारतविद्, चाइनीज़ पीपल्स एसोसियेशन फॉर फ्रेनशिप विज़ फ़ोरेन कंट्रीज़ (CPAFFC), चीन रेडियो इंटरनेशनल और मीडिया के स्टाफ़ की उपस्थिति में समारोह संपन्न हुआ । चीन में भारतीय उच्चायुक्त, डॉ. एस. जयशंकर ने भारत के प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा । चीन में भारतीय उच्चायुक्त, डॉ. एस. जयशंकर ने भारत के प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा । उन्होंने ***''भूमण्डलीकृत संसार में हिंदी भाषा की भूमिका''*** पर चर्चा करते हुए चीन और भारत के बीच संबंध स्थापित करने के लिए हिंदी के महत्व पर भी बल दिया ।

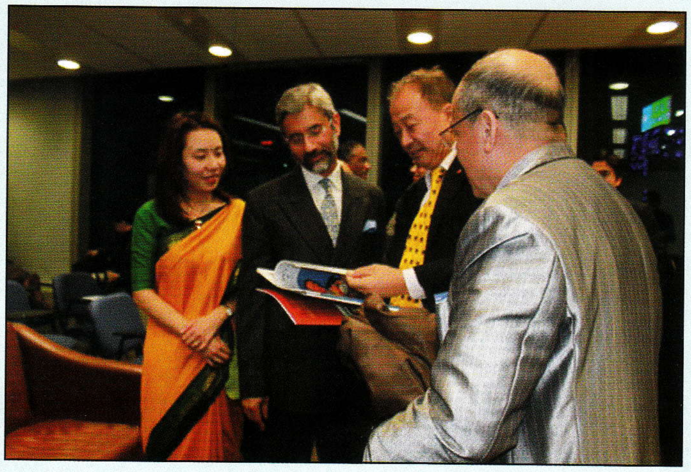

कैरो

कैरो (काहिरा) में मौलाना आज़ाद भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (MACIC) ने 10 जनवरी, 2011 को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया । इस अवसर पर हिंदी पढ़ने वाले मिस्र के छात्रों ने गीत तथा कविता पठन में भाग लिया। सुमाया नाम की एक छात्रा का कहना है : 'मैंने हिंदी भाषा सीखने का निश्चय हिंदी संस्कृति और फिल्मों के प्रति प्रेम के कारण लिया ।'

तेहरान

भारतीय उच्चायोग, तेहरान ने 10 जनवरी, 2011 को 'विश्व हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में तेहरान के केंद्रीय विद्यालय में एक सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया था । उच्चायुक्तों, तेहरान में भारतीय समुदाय के सदस्य, अध्यापकों और छात्रों ने अपनी उपस्थिति से इस गतिविधी की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर 'आधुनिक युग में हिंदी की भूमिका' विषय पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया । साथ ही कविता-वाचन, भारतीय नृत्य तथा संगीत कार्यक्रम भी हुए ।

ओमान

भारतीय सोशियल क्लब के हिंदी विंग द्वारा आयोजित 'विश्व हिंदी दिवस', 24 जनवरी, 2011 को भारतीय उच्चायोग में मनाया गया । इंडियन स्कूल दरसाइट के छात्रों ने हिंदी हास्य कविता और अन्य प्रतियोगिताएँ जीतकर अपने स्कूल की ख्याति बढ़ा दी । विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर इंडियन स्कूल दरसाइट के छात्रों ने 'अधिकार का रक्षक' प्रहसन का मंचन भी किया।

कुवेट

हिंदी भाषा की उन्नति और उसके प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयास से कुवेट के भारतीय उच्चायोग ने 13 जनवरी, 2011 को 'विश्व हिंदी दिवस' समारोह का आयोजन किया था। भारतीय उच्चायुक्त के अनुसार 'विश्व हिंदी दिवस' विश्व के कोने-कोने में हिंदी भाषा के प्रचार के प्रयासों में वृद्धि ला सकता है। उनका यह कहना है कि हिंदी एक मधुर भाषा है और यह भारत की आत्मा का स्वरूप है। इस अवसर पर भारतीय उच्चायोग ने 'भाषा का विकास देश का विकास' विषय पर आधारित वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया था जिसमें 14 भारतीय स्कूल के छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

सूरीनाम

पारामारिबो में भारतीय राजदूतावास ने सूरीनाम के हिंदी प्रेमियों व विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों के साथ 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया। सूरीनाम में विश्व हिंदी दिवस 2011 संबंधी गतिविधियों का आरंभ 11 दिसंबर 2010 को ज़िला निकेरी में प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ ही हो गया था। सूरीनाम के पाँच हिंदुस्तानी बहुल ज़िलों में सुलेख, कविता-वाचन, कहानी वाचन व रामायण चौपाई, श्लोक-वाचन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

नोएडा

पाथवेज़ स्कूल नोएडा (Pathways School Noida) ने 31 जनवरी, 2011 को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया। इस अवसर पर पाथवेज़ स्कूल के छात्रों ने हिंदी कविता पठन में भाग लिया। हिंदी दिवस समारोह को और भी रोचक बनाने के लिए हिंदी दिवस पर आधारित व्याख्यान, संगीत कार्यक्रम, हिंदी पुस्तक मेला, 'अलिबाबा चालीस चोर' और 'करादी की कहानियाँ' पर आधारित हिंदी फ़िल्मों का प्रदर्शन, पहेलियाँ सुलझाना आदि अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। प्राथमिक स्कूल के छात्रों ने विश्व हिंदी दिवस का भरपुर आनंद उठाया।

दोहा, न्यू यॉर्क, बेइजिंग, कैरो, तेहरान, ओमान, कुवेट, सूरीनाम, नोएडा के अतिरिक्त तेल आविव विश्वविद्यालय, मस्कट, अज़रबैजन यूनिवर्सिटी ऑफ़ लांग्वेजज़, कनाडा के साथ-साथ विश्व के कोने-कोने में 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया गया। सचिवालय को पूर्णाशा है कि भविष्य में इस प्रकार के आयोजन और अधिक होंगे तथा इनसे विश्व स्तर पर हिंदी की गतिशीलता बढ़ेगी। सचिवालय इन सभी समारोहों के आयोजकों को कोटि-कोटि धन्यवाद व बधाई देता है।

धन्यवाद
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

11 फरवरी, 2011 को विश्व हिंदी सचिवालय में डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र का कार्यकाल समाप्त हुआ। डॉ. मिश्र ने 11 फरवरी, 2008 को सचिवालय में उप महासचिव के रूप में अपना कार्यभार संभाला था। तदोपरांत 11 फरवरी 2009 को सचिवालय की महासचिव डॉ. विनोद बाला अरुण के अनुबंध की समाप्ति के बाद डॉ. मिश्र ने महासचिव का पद ग्रहण किया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र के कार्यकाल के तीन वर्षों के दौरान सचिवालय द्वारा हिंदी के उन्नयन में अनेक कार्य हुए। उनके योगदान से सचिवालाय ने कई गतिविधियों का सफ़ल आयोजन किया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व और अनुभव से सचिवालय को बहुत लाभ हुआ। विश्व हिंदी सचिवालय तथा हिंदी समाज की ओर से डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र को धन्यवाद। सचिवालय को पूर्ण आशा है कि डॉ. मिश्र का सहयोग भविषय में भी प्राप्त होता रहेगा।

हम सब हिंदी !

घटना छोटी सी है।

विश्व हिंदी दिवस के संदर्भ में विश्व हिंदी सचिवालय की अतिथि वक्ता, दक्षिण कोरिया की प्रोफ़ेसर किम ऊ जो को उत्तर प्रांत के समुद्र के निकट एक हॉटल में छोड़ने गया था। स्वागत कर रहे अधिकारी ने वहाँ के एक कर्मचारी को बुलाकर प्रोफ़ेसर साहिबा का सामान कमरे तक ले जाने को कहा। वह हमारे पीछे-पीछे सामान लेकर कमरे तक आया। सब कुछ सामान्य था। हम सभी दर्वाज़े पर खड़े थे। अधिकारी कमरा दिखाकर लौट गए। किम जी मुझसे बात कर रही थी। फ़िर कर्मचारी की आँखें चमकीं। और उसके मुख से स्थानीय भोजपुरी में कुछ शब्द निकले : 'चिन्वा मादाम हिन्दी बोलऽता !' *(चीनी { दिखने वाली } महिला हिंदी बोल रही है!)*

प्रश्न भी छोटा सा है। हिंदी कौन बोलता है? इस छोटे से प्रश्न में हिंदी के वैश्विक रूप के उद्घाटन की कुंजी निहित है।

विश्व हिंदी दिवस की अवधारणा अब हिंदी भाषियों के मध्य अपना महत्व स्थापित कर रही है। विश्व हिंदी समाचार के इस अंक को इसी प्रक्रिया पर केंद्रित करते हुए आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। सचिवालय की भूमि मॉरीशस में इस वर्ष भी विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। देश की सभी हिंदी सेवी संस्थाओं ने प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से अपना सहयोग दिया। साथ में, जैसा कि सूचनापत्र का यह अंक गवाही दे रहा है, विश्व के कोने-कोने में वर्ष-प्रति-वर्ष विश्व हिंदी दिवस समारोहों के आयोजन पूरे उत्साह के साथ हो रहे हैं। इस वर्ष भारत, मॉरीशस, सुरीनाम, मिस्र, न्यू ज़ीलैंड, ओमान, दोहा, यूरोप के कई देशों और अमेरिका या यूँ कहें पाँचों महाद्विपों में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हुआ। 1975 के प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर भारत की तिथि की स्मृति में भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा 2003 में घोषित यह दिवस तीव्र गति से प्रचार में आ रहा है।

ये सभी, आयोजन मात्र नहीं हैं, हिंदी भाषी होने की अस्मिता की वैश्विक स्तर पर स्थापना के सशक्त प्रयास हैं। इस प्रकार के प्रयासों से 'वैश्विक भाषा हिंदी अभियान' का एक चरण पार होता है।

अगला चरण क्या है? अगला चरण प्रारंभ होता है सामान उठाने वाले उस कर्मचारी के प्रश्न के साथ। अलग अलग देशों में, विश्व हिंदी दिवस मनाने वाले हर हिंदी भाषी को यह ज्ञात कराना कि हिंदी कौन बोलता है। विश्व स्तर पर हिंदी भाषियों का सबसे नया वर्ग इस दृष्टि से सबसे सचेत है। नए प्रवासी हिंदी प्रॉफ़ेश्नल अथवा भारत के साथ व्यवसायिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक किसी भी प्रकार का संबंध जोड़ने की इच्छा रखने वाला 'विदेशी' कुछ पूर्वाग्रहों के साथ ही सही, यह जानता है कि कौन 'हिंदी' है। वह उस हिंदी को अपनी अस्मिता का अंश भी बनाता है। आवश्यक है हिंदी की जड़, भारत के हिंदी प्रदेशों और शताब्दियाँ पूर्व का प्रवासी 'हिंदी' भी जाने कि उसके नए पल्लव विश्व के किस-किस कोने में स्थित है, कौन है।

पारंपरिक हिंदी भाषी, चाहे वह भारत में हो, या मॉरीशस, फ़ीजी, सुरीनाम, अमेरिका, इंगलैंड कहीं भी हो, यह जाने कि अब केवल 'उसके जैसे' दिखने वाले नहीं बल्कि चीनी, बर्तानी/अमेरीकी, अफ़्रिकी, रूसी, अरब हर तरह 'दिखने वाले' लोग हिंदी हैं। ऐसा होने से उसकी आँखों में वही चमक आएगी जो उस समय उस कर्मचारी की आँखों में देखी थी। उस चमक में यह था कि 'मेरी जिस भाषा को मैं कभी सड़कों पर बोलने से शर्माता था, जिसको पाठशाला में पढ़ने से मेरे बच्चे कतराते थे आज वह अमेरिकी, यूरोपीय, अफ़्रीकि, एशियायी सभी तरह दिखने वाले लोग बोल रहे हैं। विश्व भर में बोल रहे हैं। ये भी, ऐसे भी हिंदी है'। यही प्रक्रिया दूसरी ओर भी सुदृढ़ होनी चाहिए। 'नए हिंदीएत्तर क्षेत्र' के 'हिंदी' में भी यह ज्ञान बढ़े कि भारत और ऐतिहासिक हिंदीएत्तर क्षेत्र का 'हिंदी' किस प्रकार परिवर्तित हुआ है।

हिंदी की पुरानी पोस्टकार्ड छवि अब बदलनी चाहिए।

ऐसा होने से, एक-दूसरे हिंदी के बारे में अधिक तथा उचित ज्ञान होने से हमारे लिए एक नई वैश्विक अस्मिता में रूपायित होने की क्रिया-प्रक्रिया प्रारंभ होगी। विश्व के हर कोने में हिंदी भाषी 'हिंदी' होने की अपनी अस्मिता में एक और परत जोड़ेगा। 'विश्व हिंदी भाषी' बनेगा।

वैसे विश्व हिंदी भाषी की अस्मिता को आत्मसात करने का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि हर व्यक्ति अपने सीमित परिवेश से जुड़ी अस्मिताओं का त्याग कर दे। विस्तृत अस्मिता की स्वीकृति के लिए परिवेशगत अस्मिता के विलयन की धारणा आज अपना वैचारिक आधार खो चुकी है। इसलिए हिंदी भाषियों को अपने हृदय से यह भय निकाल फ़ेंकना चाहिए कि 'वैश्विक हिंदी भाषी होने पर मैं भौगोलिक दृष्टि से भारतीय, मॉरीशसीय, जापानी, अमेरिकी अथवा शैलीगत दृष्टि से शुद्ध, मिश्रित, फ़िल्मी, विदेशी हिंदी भाषी नहीं रह पाऊँगा'। अपने परिवेश में हिंदी भाषी जो है सो रहे। वैसा रहने से उसका इतिहास, उसकी संस्कृति, उसका साहित्य, यहाँ तक कि उसके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक अधिकार भी संबद्ध हैं। इन सभी को अपने-अपने परिवेश-विशेष में बनाए रखना अनिवार्य है।

इसलिए वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी के विस्तार के लिए प्रक्रिया विलयन की नहीं समंवयन की है। हिंदी भाषी भाषा से सम्बद्ध अपनी परिवेशगत अस्मिता के ऊपर समानांतर रूप से वैश्विक हिंदी भाषी होने की अस्मिता को आत्मसात करे। यहाँ यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि हिंदी भाषियों के लिए इन सभी अस्मिताओं में टकराव किसी के लाभ में नहीं है। हिंदी के लाभ में तो निश्चित ही नहीं।

वैश्विक भाषा हिंदी के लिए लाभदायक तो यही है कि एक स्तर पर आकर, कोरिया की प्रोफ़ेसर से मॉरीशस में सामान उठाने वाले कर्मचारी तक सब ये समझें कि अपनी भौगोलिक, राजनीतिक, धार्मिक, प्राकृतिक, शैक्षणिक, उच्चारणगत, लेखनगत यहाँ तक कि शब्द, शब्दकोश और सॉफ्टवैयर के प्रयोग तक सभी प्रकार की विभिन्नताओं से परे... हम सब हिंदी हैं।

गंगाधरसिंह सुखलाल

संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति सियांबर, विजया सरजु
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu
whsmauritius@gmail.com

विश्व हिंदी सचिवालय की तृतीय वर्षगांठ

बाएँ से – श्री अजामिल माताबदल, प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, श्री मिमांसक तथा श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

विश्व हिंदी सचिवालय ने 11 फरवरी, 2011 को सुब्रमण्यम् भारती सभागार, महात्मा गांधी संस्थान, मोका में अपने आधिकारिक कार्यारंभ की तृतीय वर्षगांठ मनाई । इस अवसर पर **'अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी'** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में बीज-वक्तव्य देने के लिए विख्यात भाषाविद् और भारत के सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी जी को आमंत्रित किया गया था ।

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल जी ने इस वर्षगांठ में उपस्थित समस्त हिंदी विद्वानों, हिंदी प्रेमियों तथा हिंदी छात्रों का हार्दिक स्वागत किया तथा प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी जी के प्रति आभार भी प्रकट किया कि उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ की तृतीय वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता बनने की स्वीकृति दी।

इस अवसर पर सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री अजामिल माताबदल जी ने संगोष्ठी के अध्यक्ष के रूप में सभी अतिथियों का स्वागत किया और अपना हर्ष भी प्रकट किया कि नौकरी की व्यस्तता होते हुए भी हिंदी प्रेमी बड़ी संख्या में इस संगोष्ठी में भाग लेने आए । साथ ही महात्मा गांधी संस्थान के विद्यार्थियों को विशेष रूप से धन्यवाद दिया कि उन्होंने इस संगोष्ठी में अपनी रुचि दिखाई।

भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा), श्री मिमांसक जी ने सचिवालय की ओर से इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी का स्वागत करते हुए उनके प्रति आभार प्रकट किया कि वे **'अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी'** जैसे गंभीर विषय पर व्याख्यान देने के लिए भारत से मॉरीशस आए । श्री मिमांसक जी के वक्तव्य के उपरांत महात्मा गांधी संस्थान की एक छात्रा द्वारा प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी जी का पुष्प गुच्छ से सम्मान किया गया ।

बाएँ से – श्री राज हीरामन, डॉ. हेमराज सुन्दर, श्री रामदेव धुरंधर, प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, श्री दीपक नोबिन तथा श्री अजामिल माताबदल

'अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी' विषय पर बीज वक्तव्य देते हुए विख्यात भाषाविद् प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने अत्यंत वैज्ञानिक रूप से हिंदी के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप को उभारा । उन्होंने अपने व्याख्यान में **'विदेशों में हिंदी की स्थिति'**, **'विदेशों में हिंदी के विभिन्न संदर्भ'** तथा **'विदेशों में हिंदी शिक्षण की स्थिति'** जैसे महत्वपूर्ण समकालीन विषयों पर चर्चा की । प्रो. कृष्ण कुमार

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी तथा डॉ. राजरानी गोबिन
डॉ. हेमराज सुन्दर और प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी

गोस्वामी के अनुसार वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की पहचान बढ़ गई है । ***''हिंदी मात्र साहित्य की भाषा ही नहीं वरन संचार माध्यम, संप्रेषण, मीडिया और इंटरनेट की भाषा बन चुकी है । इसलिए हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने के लिए इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने की प्रक्रिया जारी है।''***

संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए श्री अजामिल माताबदल जी ने विश्व हिंदी सचिवालय को बधाई दी और यह इच्छा भी व्यक्त की कि आगे चलकर सचिवालय और अधिक संगोष्ठियों का आयोजन करे जिससे मॉरीशस के हिंदी प्रेमी और हिंदी विद्यार्थी लाभान्वित होते रहें ।

इस अवसर पर प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने प्रगत संगणन विकास केंद्र (CDAC) की ओर से महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. राजरानी गोबिन को 'हिंदी भाषा की तैयारी' विषयक सीडी भेंट की । महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन विभाग के अध्यक्ष तथा मॉरीशस के सुप्रसिद्ध कवि डॉ. हेमराज सुन्दर ने प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी को संस्था की साहित्यिक पत्रिका 'वसंत' के तीन अंक प्रस्तुत किए ।

संगोष्ठी के उपरांत एक काव्य गोष्ठी का भी आयोजन हुआ जिसमें स्थानीय साहित्यकार डॉ. हेमराज सुन्दर, श्री राज हीरामन, श्री सूर्यदेव सिबोरत, डॉ. लालदेव अंचराज़, श्री धनराज शंभु, श्रीमती अलका धनपत, सुश्री भानुमती नागदान तथा श्री अजामिल माताबदल जी ने सुरुचिपूर्ण अपनी कविताओं का सस्वर पाठ किया ।

महात्मा गांधी संस्थान के सभागार में आयोजित इस संगोष्ठी में महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. राजरानी गोबिन तथा प्राध्यापक सुश्री अंजलि चिंतामणी, श्रीमती माधुरी रामधारी, डॉ. जयचंद लालबिहारी, श्री कृष्ण कुमार झा, हिंदी संगठन के अध्यक्ष एवं सदस्य श्री राजनारायण गति, आर्य सभा मॉरीशस के उपाध्यक्ष श्री सत्यदेव पीरतम, हिंदी प्रचारिणी सभा के सचिव श्री धनराज शंभु, डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज के निदेशक डॉ. उदय नारायण गंगू, हिंदी लेखक संघ के सचिव डॉ. लालदेव अंचराज़, एम.बी.सी (MBC) की ओर से श्री दीपक नोबिन तथा स्थानीय साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर, श्रीमती सीता रामयाद, श्री सुरेश रामबर्ण, श्री लक्ष्मीप्रसाद मंगरू, श्री परमेश्वर बिहारी, श्री ज्ञान धनुकचंद सहित अनेक विद्वान और महात्मा गांधी संस्थान की ओर से बी.ए के प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के विद्यार्थी भी अपस्थित थे ।

कार्यक्रम का अंत सचिवालय के उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल तथा संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री अजामिल माताबदल जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

संगोष्ठी में उपस्थित मॉरीशस के हिंदी प्रेमी व विद्यार्थी

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

बाएँ से - माननीय श्री मुकेश्वर चुनी, डॉ. कुंजल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र एवं महामहिम श्री मधुसूदन गणपति

मॉरीशस में विश्व हिंदी दिवस के ही अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रथम बार के लिए एक 'दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी' का आयोजन किया गया। 11-12 जनवरी, 2011 को महात्मा गाँधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में इसका आयोजन हुआ। इसमें भारत सरकार के राजभाषा विभाग की सचिव, श्रीमती वीणा उपाध्याय, भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष, प्रो. के. बिजय कुमार, साहित्य अकादेमी के सचिव श्री अग्रहार कृष्णमूर्ति, पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटड के मुख्य प्रबंधक (हिंदी), श्रीमती नीलम शर्मा एवं डॉ. ऋषिपाल सिंह चौहान और श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ की डॉ. सविता के साथ ही कोरिया की प्रो.किम ऊ जो ने भाग लिया। मॉरीशस के हिंदी लेखकों, शिक्षकों और विद्वानों के साथ ही हिंदी संगठन, आर्य सभा मॉरीशस, हिंदी प्रचारिणी सभा, सरकारी हिंदी शिक्षक संघ एवं महात्मा गाँधी संस्थान जैसी शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों एवं हिंदी प्रेमियों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर इसकी शोभा बढ़ाई।

उद्घाटन समारोह में विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ.राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी एवं भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी का स्वागत करते हुए उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों को भी अपनी उपस्थिति के लिए धन्यावद समर्पित किया। महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी ने इस समारोह को एक ऐतिहासिक मोड़ कहते हुए अपना संदेश पढ़ा- ***'विश्व हिंदी दिवस एवं अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी के आयोजन से हमने दुनिया को यह संकेत देने का प्रयास किया है कि विश्व हिंदी सचिवालय की धरती, मॉरीशस से हिंदी भाषा को वैश्विक दर्जा दिलाने के लिए हम भी प्रयास कर रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। मैं यह आशा करता हूँ कि संगोष्ठी के दौरान जो बौद्धिक विचार-विमर्ष होगा, उससे हिंदी भाषा के संवर्धन को नया बल मिलेगा, नई दिशा प्राप्त होगी।'***

कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी जी ने अपना भाषण पढ़ा - ***''मॉरीशस में हिंदी भाषा को हमारे पूर्वज़ अपने साथ लाए थे। हमारे देश का इतिहास दो सौ वर्षों का है। इतने कम समय में हिंदी को बैठकाओं के स्तर से लेकर विश्वविद्यालय तक लाने के लिए हमारी सरकार ने और कई हिंदी संस्थाओं ने बहुत संघर्ष किया है और आगे भी करते रहेंगे। भारत सरकार ने हमें हमेशा अपना सहयोग दिया है। आज अगर दुनिया भर में 80 करोड़ लोग हिंदी समझते और बोलते हैं तो हम अवश्य आगे बढ़ सकते हैं।''*** उसके पश्चात मंत्री चुनी जी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया।

प्रथम सत्र का विषय था 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण संस्थाओं के बीच समन्वय।' मुख्य वक्ता के रूप में दक्षिण कोरिया के हाँकुक युनिवर्सिटी की प्रो.(सुश्री) किम ऊ जो ने पूरी गंभीरता के साथ अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि समन्वय तभी संभव है जब विचारों का आदान-प्रदान हो। एक दूसरे को समझने से ही समन्वय की भावना जागृत हो सकती है। साथ ही पाठ्य पुस्तकों की तैयारी, विद्वानों के साथ हिंदी कैंप जैसे कार्यक्रम, यात्राएँ, हिंदी अकादेमिक संघ की स्थापना आदि सुझाव प्रो. किम ने दिये। महात्मा गाँधी संस्थान के हिंदी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.अलका धनपत जी ने भी इसी विषय पर गहन चिंतन किया तथा अलग देशों की अलग संस्कृति, शब्दों का महत्व, औपचारिक-अनौपचारिक संस्थाएँ, पुस्तकों का चुनाव, आदि पर अपने विचार व्यक्त किये। सत्र का समापन हिंदी प्रचारिणी सभा के महासचिव एवं हिंदी अध्यापक संघ के कर्मठ अधिकारी श्री धनराज शंभू ने किया। उन्होंने मॉरीशस की स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा होने वाली गतिविधियों एवं शिक्षण के माध्यम से होने वाले आदान-प्रदान की भी चर्चा की। महात्मा गाँधी संस्थान के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ.राजरानी गोबिन जी की अध्यक्षता में यह सत्र चला।

द्वितीय सत्र में 'प्रवासी हिंदी साहित्य' विषय पर चर्चा हुई। इस सत्र की अध्यक्षता विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री अजामिल माताबदल जी ने की और वक्ता के रूप में साहित्य अकादेमी के श्री अग्रहार कृष्णमूर्ति तथा मॉरीशस के प्रसिद्ध कथाकार श्री रामदेव धुरंधर ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रथम दिन के अंतिम सत्र में 'हिंदी पत्रकारिता व वेब-पत्रकारिता' विषय पर उपस्थित विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। इनमें महात्मा गाँधी संस्थान के हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक श्री कुमारदत्त गुदारी, महात्मा गाँधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन विभाग के श्री राज हीरामन एवं श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ की डॉ. सविता ने अत्यंत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुतीकरण किये।

दूसरे दिन 'भारत सरकार की राजभाषा नीति' विषय पर पहला सत्र आरंभ हुआ। भारत सरकार के राजभाषा विभाग की सचिव, श्रीमती वीणा उपाध्याय ने मुख्य वक्ता के रूप में भारत सरकार की राजभाषा नीति पर बहुत ही प्रभावशाली ढंग से पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से उपस्थित अतिथियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति पर अधिक जानकारी दी। उन्होंने संविधान, अधिनियम, नियम, संकल्प आदि विषयों पर बात की जिनसे राजभाषा नीति का स्वरूप निर्धारित होता है। वीणा उपाध्याय जी ने यह भी बताया कि भाषाओं में सौहार्दपूर्ण सहअस्तित्व की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र तथा व्यापार में भी हिंदी को लाना चाहिए ताकि वह और सुदृढ़ बने। उन्होंने यह विश्वास जताया कि वह समय दूर नहीं है जब हिंदी और सबल स्वरूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत होगी।

पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटड की मुख्य प्रबंधक (हिंदी), श्रीमती नीलम शर्मा एवं डॉ. ऋषिपाल सिंह चौहान के साथ इस सत्र में राजभाषा नीति की पृष्ठभूमि,

बाएँ से – श्री मिमांसक, श्री रवीन्द्रनाथ द्वारका, श्रीमती वीणा उपाध्याय, श्रीमती प्रेमिला ओबिलक एवं डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

संवैधानिक प्राविधान, राजभाषा नीति के विशिष्ट बिंदु, इसकी स्तुतियाँ एवं राजभाषा से संबंधित वार्षिक कार्यों एवं योजनाओं पर भी अधिक जानकारी मिली। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ.राजेंद्र प्रसाद मिश्र की अध्यक्षता में यह सत्र चला।

द्वितीय सत्र में श्रीमति वीणा उपाध्याय की अध्यक्षता में 'तकनीकी शब्दावली निर्माण और समस्याएँ' विषय पर गंभीर रूप से प्रस्तुतीकरण किया गया। इसमें मुख्य वक्ता भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष, प्रो. के. बिजय कुमार के अतिरिक्त एवं महात्मा गाँधी संस्थान के हिंदी विभाग की प्राध्यापक श्रीमती माधुरी रामधारी ने अपने विचार व्यक्त किये।

समापन समारोह में मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय की पर्यवेक्षक अधिकारी, श्रीमती प्रेमिला ओबिलक एवं महात्मा गाँधी संस्थान तथा रवींद्रनाथ ठाकुर संस्थान के अध्यक्ष श्री रविंद्रनाथ द्वार्का ने अपनी उपस्थिति दी। उनके करकमलों द्वारा इस दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।

समापन समारोह के तुरंत बाद एक कवि-संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मॉरीशस एवं भारत के कवियों ने अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाईं और उपस्थित श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। इसी अवसर पर श्री अग्रहर कृष्णमूर्ति जी की एक कन्नड कविता का हिंदी में काव्यानुवाद श्रीमती नीलम शर्मा द्वारा किया गया। एक साथ कन्नड़ तथा हिंदी में किसी कविता का आनंद लेना वहाँ उपस्थित सभी श्रोताओं के लिए एक अभूतपूर्व अनुभव था।

'दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी' के बाद 14-15 जनवरी को गवर्नमेंट हिंदी टीचर्ज़ यूनियन तथा हिंदी संगठन ने विदेश से आए अतिथि विद्वानों के साथ कार्य सत्रों का आयोजन किया था । हिंदी संगठन का कार्यक्रम साहित्यिक चर्चा पर केंद्रित रहा । गवर्नमेंट हिंदी टीचर्ज़ यूनियन के कार्य सत्र में संघ के प्रधान तथा सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री सत्यदेव टेंगर जी ने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने की योजना पर शोधपूर्ण प्रस्तुति की ।

सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी को बढ़त

हाल ही में संपन्न हुई वर्ल्ड वाईड वेब डब्ल्यू-3सी की इंटरनेशनल कांफ्रेंस में ई व एम तंत्र पर गंभीरता से चर्चा हुई जिसमें समस्त मोबाइल फोन सभी तरह के फांट को सपोर्ट करें और युनिकोड का इस्तेमाल करे । डब्ल्यू-3सी और टीटीआईएल ने इस दिशा में कार्य भी आरंभ कर दिया है । हिंदी में ई-प्रशासन के कई आयाम हैं । जिसके चलते सुशासन के लिए ई-प्रशासन एक अनिवार्य संस्थागत व्यवस्था बन गई है । इस आदर्श परिस्थिति का पूरा लाभ समाज के सभी सदस्यों को मिले । इसके लिए आवश्यक कदम उठाना और ज़रूरी तैयारी करना आवश्यक है । ई प्रशासन के विभिन्न पहलूओं का ज्ञान सबको समान रूप से देने के लिए सरकार के प्रयासों में समाज के सक्षम सदस्यों की भागीदारी ज़रूरी है। इससे जहां भाषायी एकीकरण होगा वहीं ऐसे प्रयासों से सूचना प्रौद्योगिकी के ज्ञान का प्रसार होगा और लोगों तक ई प्रशासन आधारित विभिन्न नागरिक सेवाओं की जानकारी भी आसानी से पहुँचेगी ।

कंप्यूटर पर कार्य करने के लिए अंग्रेजी भाषा के ज्ञान की निर्भरता व आवश्यकता अब पूरी तरह से हिंदी के कारण खत्म हो चुकी है । अब हिंदी प्रेमी घर में बैठे हिंदी में ई-मेल, चैटिंग, हिंदी के समाचार पत्र पढ़ सकते है । नियमित व पेशेवर रचनाकारों की रचनाओं का आनंद ले सकते है । स्वयं भी एक पेशेवर स्तंभ लेखक की तरह इंटरनेट पर उपलब्ध फ्री स्पेस व फ्री औजारों का फायदा उठाकर हिंदी में अपने आप को अभिव्यक्ति कर सकते है । इतिहास, योग, चिकित्सा, रोज़गार, शिक्षा, कैरियर आदि किसी भी विषय पर जानकारी पलक झपकते ही दे और ले सकते है। प्रासंगिक मुद्दों पर समान रूचिवाले हज़ारों मित्रों के साथ सामाजिक नेटवर्किंग वेबसाईट के माध्यम से एक दूसरे से जीवंत (लाइव) संपर्क बनाकर देख व सुन कर विचार विनिमय कर सकता है । अब हिंदी व अन्य भाषाओं में सॉफ्टवेअर का अभाव नहीं है । इस क्षेत्र में हिंदी अब अंग्रेजी की मोहताज़ नहीं रही । केंद्रीय सूचना मंत्रालय भारत सरकार की इकाई सीडेक एवं टीटीआईएल द्वारा एक अरब से भी अधिक बहुभाषी भारतीय को एक सूत्र में पिरोने और समीप लाने में अहम भूमिका निभाई जा रही है । भाषा विशेष का कोई भी एक यूनिकोड फोंट अपने पर्सनल कंप्यूटर में संधारित कीजिए और सर्फिंग करते जाइए । हिंदी आधारित वेब तकनीक को देश के बड़े अखबारों ने जल्दी ही अपना लिया है । अखबारों को पढ़ने के लिए हिंदी के पाठक को अलग-अलग फोंट की आवश्यकता होती है परन्तु संबंधित अखबार की साइट से उसे आसानी से फ्री डाउनलोड व इंस्टाल किया जा सकता है ।

इसमें संदेह नहीं है कि आधुनिक काल में इंटरनेट व मोबाइल क्रांति ने लोगों को एक दूसरे से जोड़ा है । सूचना क्रांति में अहम योगदान दिया है । लेकिन आज भी ई-मेल पते व वेबसाईट के नाम अंग्रेजी में ही प्रयुक्त हो रहे हैं । ऐसी उम्मीद की जा सकती है कि भविष्य में हम ई-मेल पते व वेबसाईट हिंदी में उपयोग करने लगेंगे । हिंदी आधारित ई व एम तंत्र : सिस्टम के माध्यम से यह सब निकट भविष्य में संभव होगा । संचार एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं । जन को मज़बूत कर रहा है हिंदी आधारित ई व एम तंत्र । सामाजिक विकास की क्रांति में हिंदी आधारित मोबाइल फोन का भी सकारात्मक योगदान है । यह यंत्र न केवल लोगों को नज़दीक ले आया है, बल्कि सूचना संपन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा रहा है व सूचना का लोकतंत्रीकरण कर रहा है । ग्रामीण, वंचित तथा शहरी संपन्न के बीच की खाई को पाटने का काम भी हो रहा है । अभी हाल ही में ई-गर्वनेन्स संबंधी प्रशासनिक सुधार की गति से क्षुब्ध होकर नये कानून बनाने पर विचार किया जा रहा है जिसमें आम नागरिकों और शासन के बीच कागज़ी काम काज को बंद कर दिया जाएगा । इस नई प्रणाली में सारा काम काज इंटरनेट के माध्यम से ही होगा । प्रस्तावित प्रणाली में नागरिकों को सभी सरकारी सेवाओं के लिए इंटरनेट के ज़रिए आवेदन करना होगा । इसमें ऐसा सॉफ्टवेअर भी होगा जिसमें तय सीमा में कोई काम न होने पर अलार्म बज उठेगा । इसके दो पहलू हैं- एक नागरिकों को सरकारी कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे या सरकारी कार्यालय में आने की आवश्यकता को खत्म करना और दूसरा कर्मचारियों द्वारा बिलम्ब व सेवा की गुणवत्ता की सॉफ्टवेअर आधारित मॉनिटरिंग करना ।

अब इसमें कोई संदेह नहीं कि ई व एम तंत्र के क्रियान्वयन से हिंदी अपने आप को बहुत ही बेहतर स्थिति में पायेगी । इसको प्रेम करनेवालों के लिए ये किसी सुखद अहसास हो सकता है यदि हम सभी सूचना व संचार तकनीक का इस्तेमाल करते हुए हिंदी पर गर्व करें और इस क्रांति को आंदोलन में परिणित करें । इसका अधिक से अधिक प्रचार करें तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी जन-जन की भाषा बन ही जाएगी ।

डॉ. अलका दर्शन श्रीवास्तव
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
धार, मध्यप्रदेश

मॉरीशस में हिंदी बाल चित्र समारोह

मल्टीमीडिया के युग में जी रहे बालकों की भाषा व उनके चरित्र के विकास में चलचित्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है परंतु दुर्भाग्यवश अधिकांशतः यही होता है कि बच्चे वयस्कों द्वारा, वयस्कों की चिंताओं, कहानियों, मनोवृत्तियों और बहुत बार विकारों पर बनाई गई फ़िल्में ही देख पाते हैं जिनसे उनका मनोरंजन भले ही हो पाता है परंतु चारित्रिक विकास बहुधा उचित मार्ग पर अग्रसित नहीं हो पाता। दूसरी ओर जब हिंदी बाल चित्रों की चर्चा होती है तो हिंदी सिनेमा उद्योग की मुख्यधारा की निर्धनता से भी साक्षात्कार होता है। इस विषय से जुड़ी समस्याओं और इस दिशा में शीघ्र कार्य करने की आवश्यकता का उचित आकलन करते हुए मॉरीशस में हिंदी संगठन ने कला एवं संस्कृति मंत्रालय, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, भारतीय उच्चायोग व चिल्ड्रंस फ़िल्म सोसायटी ऑफ़ इंडिया के सहयोग से एक बाल चित्र समारोह का आयोजन किया जिसका गाला शो बुद्धवार 23 मार्च को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स के सभागार में किया गया। गणमान्य अतिथियों के अतिरिक्त सभागार देश की कई माध्यमिक पाठशालाओं के छात्रों से पूरी तरह भरा हुआ था जो गाला शो में 'लगी शर्त' और 'पहले आप' फ़िल्मों का आनंद लेने आए थे।

हिंदी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति ने अपने स्वागत संदेश में इस प्रकार के समारोह की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि उद्घाटन के उपरांत यह बाल चित्र समारोह देश भर की शिक्षण संस्थाओं में चलता रहेगा। सभी पाठशालाओं को फ़िल्मों की प्रतियां दी जाएँगी जिनका प्रदर्शन वे अपने छात्रों के लिए कर सकेंगी और अध्यापक इनके आधार पर शैक्षणिक गतिविधियाँ भी चला पाएँगे।

मॉरीशस के शिक्षा मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी का संदेश पढ़ते हुए मंत्रालय के सहायक निदेशक श्री जीराखन ने इस योजना की प्रशंसा की और इसमें मंत्रालय के सहयोग पर गर्व की अभिव्यक्ति की। शिक्षा मंत्री ने स्थानीय पाठशालाओं में चलायी जा रही एन्हांसमेंट परियोजना द्वारा छात्रों के चरित्र के बहुआयामी विकास और चिल्ड्रंस फ़िल्म सोसायटी के साथ मिलकर शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए योजनाओं की असीम संभावनाओं पर बल दिया।

दूसरी ओर कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी ने अवसर का लाभ उठाते हुए मॉरीशस में फ़िल्म उद्योग के विकास की अपनी योजनाएँ सामने रखीं और उनमें देश के प्रतिभाशाली बच्चों के योगदान की संभावनाएँ बताईं। मंत्री जी ने हिंदी संगठन के प्रधान राजनारायण गति जी को इस आयोजन के लिए, विशेष रूप से चिल्ड्रंस फ़िल्म सोसायटी के साथ सहयोग स्थापित करने और मॉरीशस के बच्चों को उनकी रूचि के अनुरूप फ़िल्में देखने का अवसर प्रदान करने के लिए बधाई दी।

मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त महामहीम श्री मधुसूदन गणपति के प्रतिनिधि के रूप मे बोलते हुए इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका सुश्री अमिता शॉ ने इस प्रकार के आयोजनों से बालकों के चरित्र के विकास पर बात की और इनमें भारत सरकार के योगदान का विश्वास दिलाया।

इस समारोह के उद्घाटन के लिए भारत के चिल्ड्रंस फ़िल्म सोसायटी के सी.ई.ओ. श्री सुशोवन बनर्जी विशेष रूप से मॉरीशस आए थे। अपनी ओजस्वी शैली में वक्तव्य देते हुए उन्होंने दोनों देशों के बीच मानसिक सामीप्य को सराहा और मॉरीशसीय अधिकारियों को आश्वासन दिया कि इस प्रकार के किसी भी आयोजन में उनका सहयोग अवश्य मिलेगा।

कार्यक्रम में हिंदी संगठन की संरक्षिका लेडी पद्मा घरभरन तथा एम.एफ़.डी.सी की महाप्रबंधक श्रीमती कमला रामयाद भी उपस्थित थीं ।

बाल साहित्य पर साहित्य संवाद की गोष्ठी

बच्चों से बाल कहानी का पाठ कराती सुश्री अमिता शॉ

भारतीय उच्चायोग मॉरीशस और इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के तत्वावधान में साहित्य संवाद की फ़रवरी मास की गोष्ठी बाल साहित्य पर आधारित रही। आयोजकों ने इसके लिए उपयुक्त स्थान चुना जो है धारा नगरी मोंताय लोंग स्थित हिंदी प्रचारिणी सभा भवन जहाँ प्रति शनिवार सैकड़ों बालक हिंदी शिक्षण के लिए आते हैं। गोष्ठी में हिंदी प्रचारिणी सभा के अधिकारी और अध्यापक गणों के अतिरिक्त विश्व हिंदी सचिवालय के उप महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, हिंदी लेखक संघ के अध्यक्ष डॉ. लालदेव अंचराज़, साहित्यकार बंधु व भारी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित हुए।

कार्यक्रम दो भागों तथा दो वक्ताओं में विभाजित रहा। प्रथम अंश में मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी सेवी श्रद्धेय श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ ने बाल साहित्य के सैद्धांतिक पक्ष पर चर्चा की। बाल साहित्य एवं बच्चों के शिक्षण के क्षेत्र में अपने लम्बे अनुभव के आधार पर श्री भोला जी ने बाल साहित्य लेखन, उसके विषय, तकनीक और संभावनाओं पर सटीक बातें की।

कार्यक्रम का दूसरा भाग बहुत ही रोचक रहा जिसमें इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका सुश्री अमिता शॉ ने उपस्थित बच्चों से बाल साहित्य का अत्यंत रोचक ढंग से पाठ कर्वाया। बालकों के लिए यह अनोखा अनुभव था इसलिए प्रारंभ में उनकी हिचक का सामना करना पड़ा। परंतु दिल्ली के बाल भवन में बच्चों के साथ दशकों के संपर्क के बल पर अमिता जी को बच्चों के हृदय के पट खोलने और उनके उत्साह की धारा प्रवाहित करने में देर न लगी। अंततः एक एक प्रस्ताव पर दसियों हाथ उठने लगे, कई बाल कहानियों का बच्चों के ही मुख से मनमोहक पाठ हुआ तथा बच्चे और आयोजक इस प्रकार के अन्य कार्यक्रमों की लालसा मन में लिए विदा हुए।

होली के अवसर पर

हास्य कवि सम्मेलन

हिंदी संगठन मॉरीशस ने इस वर्ष होली के अवसर पर शनिवार उन्नीस मार्च को स्थानीय कवियों द्वारा हास्य कवि सम्मेलन का सुंदर आयोजन किया। जुटाव देश के उत्तर में पेची राफ़े गाँव के आर्य समाज मंदिर के सभागार में लगा जहाँ कविता प्रेमियों की भीड़ जमा हुई।

मॉरीशस के साहित्य प्रेमियों के लिए हास्य कवि सम्मेलन का पिछला अनुभव विस्मृत सा हो गया था और हिंदी संगठन ने इस अनुभव के फीके पड़ रहे रंगों को पुनःजीवित करने के लिए होली का उपयुक्त वातावरण और समय चुना। हिंदी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति जी के संदेश के उपरांत सम्मेलन में देश के कुछ जाने माने कवियों ने अपनी स्वाभाविक गंभीर कविताओं को एक दिन के लिए छोड़कर उपस्थित काव्य रसिकों को हास्य का आनंद लेने का अवसर दिया। इनमें वरिष्ठ कवि अजामिल माताबदल, सूर्यदेव सीबोरथ, कल्पना लालजी, सुमति बूधन, इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ, श्रीमति बल्जीयावन और पेची राफ़े गाँव से ही श्री गुरुदत्त बस्गोपाल सम्मिलित थे।

लंदन में सक्रिय संस्था कथा यूके सम्मानित

ब्रिटेन में भारतीय उच्चायुक्त नलिन सूरी ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था कथा यूके को साहित्य और भाषा के प्रचार प्रसार के लिए वर्ष 2010 का 'फ्रेड्रिक पिन्कॉट सम्मान' प्रदान किया है । इस कार्यक्रम में उषा राजे सक्सेना को 'हरिवंशराय बच्चन सम्मान', दिवांगत महावीर शर्मा को 'हज़ारी प्रसाद द्विवेदी सम्मान' (पत्रकारिता - मरणोपरांत) और ऐश्वर्य कुमार को 'जॉन गिलक्रिस्ट सम्मान' (अध्यापन) भी प्रदान किए गए । कार्यक्रम का आयोजन भारतीय उच्चायोग लंदन में किया गया । उप-उच्चायुक्त श्री प्रसाद और मोनिका मोहता मंच पर उपस्थित थे । भारतीय उच्चायोग में हिंदी एवं संस्कृति अधिकारी आनंद कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया ।

इस अवसर पर कथा यूके के महासचिव तेजेन्द्र शर्मा ने संस्था की विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख किया । उन्होंने कहा कि कथा यूके हर वर्ष ब्रिटेन की संसद के हाउस ऑफ़ कॉमन्स एवं हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स में भारतीय साहित्य को स्थापित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय 'इंदु शर्मा कथा सम्मान' एवं 'पद्मानंद साहित्य सम्मान' का आयोजन करती है । इसके अलावा पिछले वर्ष इस संस्था ने टोरोंटो (कनाडा) में एक हिंदी कहानी की कार्यशाला का आयोजन किया था जबकि इसी वर्ष फ़रवरी में डीएवी कॉलेज यमुना नगर के साथ मिल कर भारत में तीन दिवसीय प्रवासी कहानी सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था।

बी.बी.सी हिंदी से साभार

अंतर्राष्ट्रीय पूश्किन सम्मान कवि आलोक श्रीवास्तव को

मास्को। हिंदी के जाने-माने कवि आलोक श्रीवास्तव को उनकी पुस्तक 'आमीन' के लिए रूस का अंतर्राष्ट्रीय पूश्किन सम्मान दिए जाने की घोषणा की गई है। रूस के 'भारत मित्र' समाज द्वारा प्रतिवर्ष हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि या लेखक को मास्को में हिंदी साहित्य का यह महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय सम्मान दिया जाता है। पिछले तीन वर्ष से इस सम्मान की घोषणा नहीं की गई थी। लिहाज़ा हाल के वर्षों में प्रकाशित हिंदी की चर्चित पुस्तकों का जायज़ा लेने के बाद सम्मान-समिति ने आलोक श्रीवास्तव के गज़ल-संग्रह 'आमीन' को अंतर्राष्ट्रीय पूश्किन सम्मान, वर्ष 2008 देने का निर्णय लिया है।

आलोक को यह सम्मान जल्द ही मास्को में आयोजित होने वाले एक गरिमापूर्ण कार्यक्रम में दिया जाएगा। लगभग दो दशक से लेखन-क्षेत्र में सक्रिय आलोक श्रीवास्तव की रचनाएँ हिंदी-साहित्य की सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। वे फ़िल्म और टेलीविजन धारावाहिकों में लेखन-कार्य भी करते हैं और उनकी ग़ज़लों व नज़्मों को जगजीत सिंह और शुभा मुद्गल जैसे कई ख्यातनाम गायक अपनी आवाज़ दे चुके हैं।

'पाँव ज़मीन पर' का लोकार्पण

जम्मू । युवा हिंदी लेखक संघ ने उर्दू विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय के प्रो.ज्ञानचंद सभागार में 'धरती' के संपादक कवि-कथाकार, शैलेंद्र चौहान की नई कृति 'पाँव ज़मीन पर' के लोकार्पण समारोह का आयोजन किया। वरिष्ठ प्रगतिशील कथाकार पुन्नी सिंह, ने पुस्तक के ग्राम्य जीवन केंद्रित कथा रिपोर्ताजों का विश्लेषण करते हुए कहा कि लेखक ने उत्तर भारतीय ग्रामीण जीवन का सफल चित्रण किया है। प्रेमचंदोत्तर भारतीय किसान के जीवन एवं ग्रामीण परिवेश पर लेखक की पैनी दृष्टि है।

युवा हिंदी लेखक संघ जम्मू के प्रधान शेख मोहम्मद कल्याण ने संस्था का परिचय देते हुए अतिथियों का स्वागत किया। अमिता मेहता ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ.अशोक कुमार ने धन्यवाद दिया। समारोह में जम्मू एवं निकटवर्ती क्षेत्र के बुद्धिजीवियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

प्रस्तुती- शेख मोहम्मद कल्याण

श्रद्धांजलि

वरिष्ठ हिंदी आलोचक कमला प्रसाद नहीं रहे

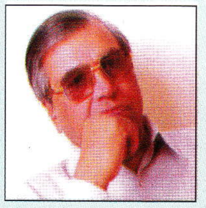

हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार और आलोचक प्रो. कमला प्रसाद का शुक्रवार 25 मार्च की सुबह नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्था (AIIMS) में निधन हो गया । कैंसर से पीड़ित कमला प्रसाद जी का लंबे समय से इलाज चल रहा था । प्रो. कमला प्रसाद मध्यप्रदेश से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका वसुधा के संपादक और प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय महासचिव थे । प्रो. प्रसाद भारतीय भाषा संस्थान (CIIL), केंद्रीय हिंदी संस्थान आदि कई राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ लंबे समय तक जुड़े रहे और कई सम्मान प्राप्त कर चुके हैं । मध्य प्रदेश के सतना ज़िले के गाँव धौरहरा में 1938 में जन्मे प्रो. प्रसाद की प्रमुख कृतियाँ साहित्य शास्त्र, आधुनिक हिंदी कविता और आलोचना की द्वंद्वात्मकता, रचना की कर्मशाला, नवजागरण के अग्रदूत भारतेंदु हरिश्चंद्र हैं । प्रो. कमला प्रसाद ने मानवीय गरिमा के लिए सदैव संघर्ष और कड़ी मेहनत से हिंदी का मार्गदर्शन किया है । सभी हिंदी साहित्यकार, भाषाविद, संस्कृतकर्मियों की ओर से उनको श्रद्धांजलि ।

डॉ. शमशेर अहमद खान का निधन

हिंदी के जाने-माने खोजी पत्रकार एवं विभिन्न विधाओं के लेखक तथा भारत सरकार के भाषा विभाग में कार्यरत उप-निदेशक डॉ. शमशेर अहमद खान का 7 फरवरी, 2011 को लम्बी बीमारी के बाद राजीव गांधी केन्सर संस्थान में देहांत हो गया । डॉ. खान ने जहां हिंदी के विकास में अपनी अहम भूमिका निभाई वहीं वे दूरदर्शन के कई कार्यक्रमों के साथ भी जुड़े रहे । खान साहब की बाल पत्रिकाओं में भी विशेष रुचि थी । उन्होंने चन्दामामा व लोट पोट जैसी अनेक पत्रिकाओं में बच्चों के लिए कहानी, चुटकुले व लेख लिखे । इसके अलावा उन्होंने हिंदी के विकास के लिए अपने जीवन काल में अथक प्रयास किए । जिसके लिए उन्हें कई बार हिंदी प्रेमियों ने सम्मानित किया । डॉ. खान ने देश-विदेश में आयोजित कई हिंदी संगोष्ठियों में भी भाग लिया और वहां हिंदी के प्रचार और प्रयास के लिए कार्य किया । खान साहब ने हिंदी की कई पुस्तकें भी लिखीं। खान साहब के देहांत से हिंदी जगत ने एक प्रतिभाशाली लेखक, रचनाकार कवि एवं खोजी पत्रकार खो दिया है ।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन संपन्न

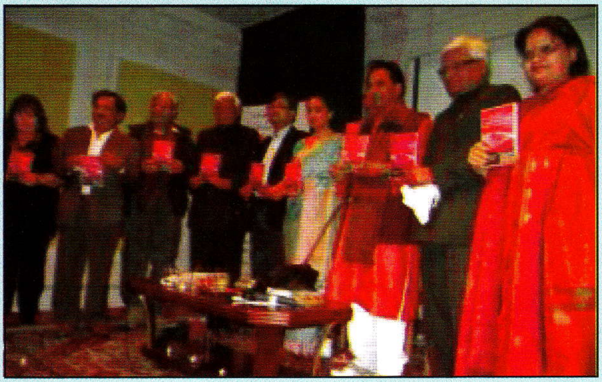

11 से 13 मार्च, 2011 तक ब्रिटेन में चौथे अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। । इस सम्मेलन का आयोजन यू.के. हिंदी समिति द्वारा नेहरू सेंटर, भारतीय उच्चायोग और आई.सी.सी.आर के तत्वावधान में किया गया था। दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन और वरिष्ठ आलोचक डॉ. सुधीश पचौरी ने ब्रिटेन में हिंदी के प्रोफ़ेसर नियुक्त करने और चेयर स्थापित करने की माँग की। उन्होंने कहा कि हिंदी शिक्षण के कार्य में लगे शिक्षकों को उपयुक्त प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इस अवसर पर अपना वक्तव्य देते हुए डॉ. अशोक चक्रधर ने अध्यापक प्रशिक्षण पर बल दिया। इस सम्मेलन का आयोजन यू.के. हिंदी समिति के 20 वर्ष और यूरोप के विद्यार्थियों में अत्यंत लोकप्रिय हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता के 10 वर्ष पूरे होने के अवसर पर किया गया था। यू.के. हिंदी समिति के अध्यक्ष डॉ. पदमेश गुप्ता इस सम्मेलन के संयोजक थे ।

सम्मेलन का उद्घाटन बर्मिंघम में भारत के कोंसुल जनरल गुरू राज राव द्वारा 11 मार्च को किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता मास्को स्टेट विश्वविद्यालय में इंस्टीट्यूट ऑफ़ एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज़ के अध्यक्ष बोरिस ए जाकरियान ने किया । इस अवसर पर आई.सी.सी.आर. के अधिकारी अजय गुप्ता ने आई.सी.सी.आर. की ओर से हिंदी के प्रचार-प्रसार में हर तरह के सहयोग का आश्वासन दिया। इस संदर्भ में विभिन्न शैक्षणिक सत्रों और कवि सम्मेलनों का आयोजन कला निकेतन हिंदी स्कूल, नाटिंघम द्वारा शनिवार 12 मार्च को और नेहरू सेंटर, लंदन द्वारा 13 मार्च को किया गया ।

सम्मेलन में केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ. अशोक चक्रधर और बालेंदु दधीच द्वारा हिंदी शिक्षण में नई प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर ज़ोर दिया गया । हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के सोफ्टवेयरों की अपलब्धता पर भी बल दिया गया । इस सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ लेखक तेजेंद्र शर्मा ने की । सम्मेलन के संयोजक डॉ. पद्मेश गुप्त ने कहा कि हिंदी को अगली पीढ़ी तक ले जाने के लिए हिंदी शिक्षण पर सबसे ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

समापन समारोह में कार्यक्रम की संरक्षक और मार्गदर्शक नेहरू केंद्र की निदेशक मोनिका मोहता ने इतने सार्थक सम्मेलन के आयोजन के लिए वातायन, यू.के. हिंदी समिति की दिव्या माथुर, कृति यू.के. के डॉ. के.के. श्रीवास्तव और तितिक्षा व कला निकेतन स्कूल, नाटिंघम की सुदर्शन मोहिन्द्रा और जया वर्मा को बधाई दी और कहा कि ब्रिटेन में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में ये संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं ।

ब्रिटेन के कई अध्यापकों, डॉ. अनिता अब्बी, भाषाविद् सुदर्शन मोहिन्द्रा एम.बी.ई, वेद मोहला एम.बी.ई, सुरेखा चोफला, शशि वालिया और देविना ऋषि ने विदेशों में हिंदी के अध्यापन में आने वाली समस्याओं पर गहन चर्चा की ।

कई अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति जैसे भारतीय उच्चायोग में हिंदी और संस्कृति अधिकारी आनंद कुमार, भारतीय उच्चायोग की पद्मजा, डॉ. निखिल कौशिक, शिखा वार्ष्णेय, पाल निश्चल, बकुल कुमार आदि ने कार्यक्रम में भागीदारी की ।

सायंकाल को कवि सम्मेलनों का आयोजन किया गया जिनमें अशोक चक्रधर तथा कवयित्री बागेश्री चक्रधर ने भी अपनी रचनाओं का पाठ किया । गगनांचल के अतिथि संपादक डॉ. प्रेम जनमेजय ने इस अवसर पर अपनी व्यंग्य रचनाओं को पढ़ा । प्रवासी दुनिया डॉट काम इस कार्यक्रम का मीडिया पार्टनर था।

दिल्ली से सरोज शर्मा की रिपोर्ट

लंदन में हिंदी कविता सेमिनार

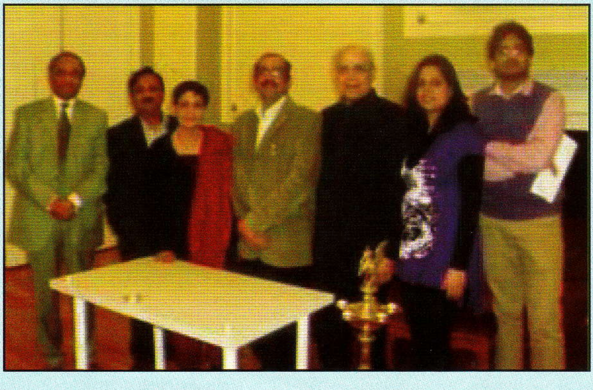

लंदन । रविवार की संध्या थी और उस दिन ठण्ड भी बहुत थी परंतु हिंदी के कुछ कवियों ने ठंडे मौसम में गर्माहट लाने में कोई कसर नहीं छोड़ी । लंदन के नेहरु सेंटर में संपन्न हुआ हिंदी समिति और वातायन, साउथ बैंक द्वारा आयोजित एक कविता सेमिनार जिसकी अध्यक्षता की वरिष्ठ पत्रकार एवं साउथ एशियन सिनेमा फ़ेडेरेशन के संस्थापक श्री ललित मोहन जोशी ने ।

सभा का आग़ाज़ सोहन राही जी ने अपनी शानदार रचनाओं से किया। इनका परिचय देते हुए डॉ.पदमेश गुप्त ने कहा कि जिस लंदन में गीत लिखना तो दूर, गीत गुनगुनाने का भी समय नहीं है, वहाँ राही जी जैसे शायर की कलम मोती लुटा रही है, जो लंदन की सारी चमक दमक को फीका कर रही है । उन्होंने कहा कि राही जी 70 वर्ष के ऐसे जवान हैं जिनके नवीनतम अशआर आज भी नौजवानों के दिलों में गूँज उठते हैं। राही जी ने अपनी बेहतरीन ग़ज़ल और गीत अपने शानदार अंदाज़ में सुनाये जिससे महफ़िल में उनकी बयानगी के दौरान वाह-वाह के स्वर गूँजते रहे। उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध रचना भी सुनाई और पूरी रचना के दौरान मुक़र्रर के सवर गूँजते रहे ।

"समंदर पार करके अब परिंदे घर नहीं आते
अगर वापस भी आते हैं तो लेकर पर नहीं आते ।"

राही जी के बाद दिव्या माथुर ने अपनी संवेदनशील रचनाओं का वाचन आरंभ किया जिसमें उन्होंने मेरी ख़ामोशी, धत्त, तीन पीढ़ियाँ आदि रचनाओं से श्रोताओं का मन मोह लिया। दिव्या की रचनाओं का परिचय देते हुए शिखा वार्ष्णेय (स्वतंत्र पत्रकार, लेखक) ने कहा कि दिव्या माथुर की कविताएँ यथार्थ के धरातल पर लिखी हुई हैं । सामाजिक संरचना और उसमें व्याप्त कुरीतियों पर धारदार व्यंग्य उनकी रचनाओं का एक महत्वपूर्ण भाव है । उनकी रचनाओं को एक ही वाक्य में समझाया जा सकता है, और वह है 'गागर में सागर'। बहुत थोड़े से शब्दों में गहरी और पूरी बात प्रभावी ढंग से कह देने की अद्भुत क्षमता है उनकी लेखनी में। कहीं कहीं तो जैसे सिर्फ एक शब्द ही पूरी कहानी कह देता है, जैसे 'सुनामी सच' ।

तत्पश्चात पदमेश का परिचय देते हुए डॉ. के.के. श्रीवास्तव (जो कि स्वयं एक कवि होने के साथ-साथ कृति यू.के. के अध्यक्ष हैं और बी.बी.सी. में अपनी क्रिकेट कमेंट्री के लिए जाने जाते हैं) ने कहा कि गूढ़ भावों को सरल शब्दों में व्यक्त करना आसान काम नहीं परंतु पदमेश जी चाहें तो अपनी रचनाओं से रुला दें और चाहें तो हँसा-हँसा कर लोट-पोट कर दें । उन्होंने कहा कि साहित्य मंच पर जिस शान से पदमेश जी बल्लेबाज़ी करते हैं उनके सामने सहवाग और तेंदुलकर भी नहीं टिक सकते । उनका वक्तव्य खरा उतरा जब किसी एन्साइक्लोपीडिया की तरह पदमेश जी ने अपनी रचनाएँ सुनानी शुरू कीं । 'बाढ़', 'बर्लिन की दीवार' और 'नीम का पेड़' जैसी कविताएँ सुनाकर उन्होंने हर श्रोता के दिल को छू लिया। पदमेश के कविता - वाचन के दौरान श्रोता भाव विभोर हो गए । उनकी कविताओं में निहित प्रभावशाली भाव श्रोताओं के मुखमंडल पर भी उसी तरह दृष्टिगोचर हो रहे थे ।
तदोपरांत वरिष्ठ कवि एवं पत्रकार गौतम सचदेव का परिचय डॉ.पदमेश गुप्त ने दिया। उन्होंने कहा कि डॉ. गौतम सचदेव ब्रिटेन में हिंदी के ऐसे हस्ताक्षर हैं, जिनसे हिंदी का हर छोटा-बड़ा लेखक अपने साहित्य पर टिप्पणी चाहता भी है और टिप्पणी से घबराता भी है । उन्होंने आगे कहा कि साहित्य के प्रति पूरी ईमानदारी लिये गौतम जी ब्रिटेन के एकमात्र ऐसे हिंदी लेखक हैं जिनका व्यंग्य निबंधों का संग्रह 'सच्चा झूठ' प्रकाशित हुआ है । फिर क्या था, गौतम जी ने अपनी धारदार रचनाओं से समा बाँध दिया। 'नंगापन', 'पुस्तक का मूल्य', 'ज़ख्म', जैसी रचनाओं ने श्रोताओं का खूब मनोरंजन किया और सभी के मन पर प्रभाव छोड़ने में पूर्णत: सफल रहीं ।

श्री ललित मोहन जोशी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी कवियों का अवलोकन करते हुए कहा कि सोहन राही की रचनाओं में क्लासिक अदायगी है तो दिव्या माथुर की रचनाएँ सामाजिक यथार्थ पर लिखी गई हैं । उन्होंने पदमेश को और यू.के. हिंदी समिति को इस तरह के आयोजन के लिए बधाई दी और कहा कि उनकी रचनाएँ सरल और बेहद प्रभावी हैं। गौतम जी की रचनाओं के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि उनकी रचनाओं में जटिलता, गंभीरता, इमेजरी और सटीक उपमाओं के भाव प्रमुख होते हैं ।

इस प्रशंसनीय समारोह का संचालन बेलफास्ट के श्री दीपक मशाल ने किया ।

लंदन से शिखा वार्ष्णेय की रिपोर्ट